

ORDER SHEET

THE COURT

आपराधिक प्रकरण क्रमांक. —

Date of Order of Proceeding	राज्य द्वारा आरक्षी केन्द्र <u>दुधनपुर</u> <u>01/2</u> Order or proceeding with Signature of Presiding Officer	Signature of Parties or Pleaders where necessary
3/2/20	आरक्षी केन्द्र <u>दुधनपुर</u> की ओर से आरक्षक <u>श्रीमान</u> (क्रमांक <u>.....</u>) द्वारा अपराध क्रमांक <u>.....</u> में आरोपी <u>कालू पिता भोगीलाल शोही उर्फ बिबिगेदा</u> के विरुद्ध धारा 34(1) आबकारी अधिनियम के अंतर्गत यह अभियोग पत्र प्रस्तुत किया। अभियोग पत्र के परिशीलन उपरांत धारा 190(1)(ख) द प्रस के अधीन मामले का सज्ञान लिया गया। अभियोग पत्र न्यायालय की नियमित दांडिक प्रकरणों की पंजी में विधिवत पंजीबद्ध किया जावे। धारा 207 द प्रस के अनुपालन में अभियुक्त को अभियोग एवं प्रपत्रों की प्रतिलिपि दिलाई गई। प्रकरण में जप्तशुदा सम्पत्ति विधिवत मालखाना विभाग में जमा की जावे। आरोपी आज स्वयं उपस्थित है। उसके प्रकट किया है कि वह स्वयं अपना पक्ष समर्थन करने एवं अपराध स्वीकारोक्ति करना चाहते हैं। अभियुक्त का यह समझाया गया कि वह स्वीकारोक्ति के लिए वाय नहीं है और यदि वह अपराध स्वीकारोक्ति करता है तो उसके विरुद्ध उपराध में लिया जाकर उसके कारावास को दण्डादेश से भी दंडित किया जा सकता है। इस पर अभियुक्त का कहना है कि क्या स्वेच्छया बिना किसी मजबूत दवाब व लातल की अपराध स्वीकार करना चाहता है। तदनुसार सक्षिप्त विचारण अधिकृत अपराध स्वीकारोक्ति सक्षिप्त विचारण सक्षिप्त प्रपत्र पर अभियुक्त को धारा 34(1)(क) म प्र आबकारी अधिनियम के अपराध की निशिष्टिया पढ़कर सुनाये एवं समझाये जाने पर अभियुक्त ने स्वेच्छया अपराध स्वीकारोक्ति की। तदनुसार स्वीकारोक्ति के आधार पर अभियुक्त को उक्त अपराध के लिये न्यायालय अवसान तक के कारावास व <u>रु. 1400/- अंतरा रीक्षण</u> के अवदण्ड से दण्डित किया जाता है। अभियुक्त ने आरोपित अवदण्ड की राशि रुपये <u>रु. 1400/-</u> ई पैमेण्ट 0070 <u>346</u> पर जमा की जिसे उसकी रसीद प्रदान की गई। निष्कर्ष नियमित आपराधिक पंजी में अंकित कर समयावधि में प्रकरण विनिवृत तैयार कर अभिलेखागार प्रेषित किया जावे। पुनः रव अभियुक्त का न्यायालय उठने तक की सजा भुगतवाई जाकर प्रत्यक्ष में रिला किया गया।	<u>कालू</u> <u>रु. 1400/-</u> <u>346</u>